बनास जन

सूफ़ी काव्य और समाज

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

सूफ़ी काव्य और समाज

बनास जन
दिसम्बर 2023

अव्यावसायिक
अंक 68, वर्ष 15

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 50 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–75 रुपये
100 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–125 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात 4

भक्तिकालीन सूफ़ी काव्यधारा : सामाजिक आधार, देशजता और बहिःसांस्कृतिकता — सुकृति मिश्रा 5

सूफ़ी काव्यों में समाज-चित्र : सामाजिक संरचना और सामाजिक संस्थाएँ, वर्गीय जीवन और सामाजिकता — प्रगति मिश्रा 26

सूफ़ी काव्यों में समाज चित्र — आशा सिंह 49

अपनी बात

भारतीय मध्यकालीन साहित्य में सूफ़ी प्रभाव का बड़ा महत्त्व है। मध्यकाल से अंग्रेजी शासन तक भारतीय समाज की पारस्परिकता और सामुदायिकता को गहराई से जोड़ने में इस काव्य की भूमिका है। सूफियों का कलाम गुरु ग्रन्थ साहब जैसे महान ग्रन्थ में भी सम्मानित स्थान पा गया तो इसमें आश्चर्य नहीं होता बल्कि यह मालूम होता है कि इस काव्य की सामाजिक उपस्थिति कितनी अधिक थी। यह सूफ़ी कविता में ही संभव था कि जायसी अलाउद्दीन को खलनायक और रत्नसेन को नायक बनाकर पद्मावत जैसा आख्यान रचते हैं। और यही नहीं ऐसे आख्यानों की लोकप्रियता का यह आलम है कि इतिहास इनके आगे नहीं पीछे चलता है।

इधर मध्यकालीन साहित्य को फिर से पढ़ने-समझने में पाठकों की रुचि बढ़ी है। हमारे अनेक मध्यकालीन कवियों-ग्रंथकारों पर नये ढंग से शोध -आलोचना के काम हुए हैं। पश्चिम के विद्वानों ने इस कालखंड पर नयी दृष्टि से किताबें लिखी हैं। हिन्दी की अकादमिक दुनिया पर यह आरोप लगता है कि शोध के नाम पर यहाँ ढर्राबद्ध काम ही होता है जिसमें किसी प्रकार की नवीनता या सुरुचि का प्रायः भी अभाव होता है। इस अंक में सम्मिलित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की शोध छात्राएँ रहीं तीन अध्येताओं के लेख दिए जा रहे हैं जो इस कालखंड की कविता पर नयी दृष्टि से विचार करते हैं।

सवाल यह भी है कि आज के परिदृश्य में मध्यकालीन कविता की क्या उपयोगिता हो सकती है? इसका उत्तर यही है कि पुरानी कविता भी हमारी जातीय स्मृतियों की थाती है। यह कविता हमें जीवन और जगत के वास्तविक सवालों के बारे में फिर सावधान करती है और आज के हाहाकारी समय में मनुष्यता के वास्तविक स्वरूप को पहचानने की समझ देती है। बहुत अधिक वर्तमानता के समक्ष यह किंचित मध्यकालीन कविता हमें आत्मावलोकन का दुर्लभ अवसर भी देती है।

आशा है पाठकों को अंक उपयोगी प्रतीत होगा।

पल्लव